लघुसिद्धान्तकौमुदी

(समासः)

पूर्व में बताया गया है कि 'अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि०...' सूत्र से अव्ययीभाव समास होता है। अव्ययीभाव समास पूर्वपद प्रधान होता है, अर्थात् इसमें पूर्वस्थित पद की प्रधानता होती है। 'अव्यय' वैसे शब्दखण्ड होते हैं जिनका सुबन्त रूप नहीं बनता। पूर्व में बताया गया है कि विभक्ति, समीप, समृद्धि आदि अर्थों में अव्ययीभाव समास 'अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि०...' सूत्र से बताया गया है अब 'सादृश्य' अर्थ में समास बताया जाएगा।

रूसाखि - 'सदृश: सख्या' इस प्रकार के लौकिक विग्रह करने पर सादृश्य अर्थ में 'सह' यह अव्यय आया है। अव्ययीभाव समास होने के कारण 'अव्ययीभावे चाकाले' सूत्र से 'सह' का 'स' आदेश

हो गया। 'सखि टा स सु' इस प्रकार के अलौकिक विग्रह की स्थिति में सादृश्य अर्थ में 'अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धि०—' सूत्र से अव्ययीभाव समास हो गया। 'स सु' के नित्य प्रथमानिर्दिष्ट होने के कारण 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञा हो गई एवं 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व प्रयोग हो गया। फिर 'सुपोधातु प्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुबन्त प्रत्ययों के लोप होने पर 'सखाखि' शब्द भी 'कृत्तद्धित समासाश्च' सूत्र से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा होने 'स्वौजस्मौट्०—' सूत्र से प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'सु' प्रत्यय होने पर तथा 'सुपोधातु प्रातिपदिकयोः' सूत्र से 'सु' के लोप होने पर 'सखाखि' शब्द निष्पन्न होता है।

Rahul Ranjan